सूरदास के काव्य में राधा का चरित्र चित्रण

डॉ. ओमवीर सिंह
हिन्दी विभाग,
विवेकानन्द कॉलिज, दिल्ली

सारांशिका

''सूर दास की राधा एक सामग्र नारी है जिसकी तुलना अन्यत्र दुर्लभ है।'' एकदम सच तो यह है कि ''.....सूर दास की राधिका न तो विलासिनी है और न ग्वालिन। इन दोनों रूपों का एक विचिन सामंजस्य ही मानों सूर दास का अभीष्ट प्रतिपाद्य है।''

पुष्टि मार्गीय प्रभाव और दार्शनिक–आध्यात्मिक विचारधारा और कवि सूरदास के समकालीन समाज में स्त्री की स्थिति आदि के फलस्वरूप सूर की राधा में प्रतीकत्व का भी समावेश है। दार्शनिक–आध्यात्मिक दृष्टि से राधा का यह रूप मुख्यतः 'ब्रह्मवैवर्त्त पुराण' से लिया हैकिन्तु अन्धानुकरण नहीं किया है। 'कृष्ण–भक्ति दीजे श्री राधे, सूर दास बलिहारी' कहने वाले कवि ने राधा को जगत–जननी का गौरवशाली पद दिया है जहाँ पर वह परब्रह्म रूपी कृष्ण की चिरसंगी शक्ति है। 'सुनु राधिके तोहि माधो सौं प्रीति सदा चलि आई' तथा 'जन्म–जन्म जुग–जुग यह लीला प्यारी जानि लई' कहकर कवि इनके इसी रूप को प्रदर्शित करता है।

मुख्य शब्द : सूरदास, काव्य, राधा, चरित्र, चित्रण, स्त्री।

राधा का चरित्र चित्रण कवि की प्रामाणिक रचनाओं–'सारावली', 'साहित्य–लहरी' तथा 'सूर सागर' में मिलता है। इनमें से 'साहित्य–लहरी' में मुख्यतः नायिका–भेद के अनुसार तथा 'सारावली' में अध्यात्मक प्रधान प्रतीकमय होली रुपक के अन्तर्गत ब्रह्म –प्रकृति रुप में ही राधा का चित्रण है। राधा–चित्रण सर्वाधिक रुप–मात्रा में किया गया है–'सूर सागर' में जहाँ कृष्ण–जन्म से लेकर द्वारिका में हुए राधा–कृष्ण–पुनर्मिलन तक पग–पग पर राधा चित्रित हुई है। वस्तुतः सूर काव्य में राधा का चरित्र मुख्यतः दो रुपों में देखने को मिलता है–(1) मानवी रुप में, तथा (2) प्रतीक रुप में। मानवी रुप के भी दो स्वरुप हैं–पहली कृष्ण की बालसहचरी तथा दूसरी कृष्ण–बल्लभा (प्रेमिका–स्वकीया)। इसी तरह से प्रतीक–रुप भी दो प्रकार का है–पहला कृष्ण–ब्रह्म की शक्ति (प्रकृति) तथा दूसरा स्फुट यथा ग्राम्य–नारी का प्रतिनिधित्व, समकालीन नारी–समाज का प्रतिनिधित्व आदि करती हुई दिखलाई पड़ती है जिसका सूरदास ने बहुत सुन्दर चित्रण किया है।

मानवी रूप में राधा वृन्दावन के समीपस्थ 'बरसाना' ग्राम के प्रधान राजा वृष भानु की पत्री है–अनिंद्य रुपसी, रति का साक्षात् रूप, नाना प्राकृतिक सुषुमाओं से निर्मित प्रकृति की अद्‌भुत देन–लाल की बरसात–लालच से मुरली लुका देने वाली वह 'आँख मिचौनी' में बड़री अंखियान के कारण बदनाम, बरसाने की छबलीली छोटी है। किसी समय **'बूझत स्याम कौन तू गौरी'** से प्रारम्भ हुआ। उसका बाल सुलभ कृष्ण–परिचय शीघ्र ही 'नीबी ललित गही जदुराई' तक पहुँच जाता है। वस्तुतः इस परस्परिक बाल सुलभ प्रेम के मूल कारण हैं–रुप–लिप्सा और बाल–साहचर्य जब कभी 'सूर स्याम देखत ही रीझे' और 'बातन भुरइ राधिका भोरी' में प्रस्फुटित होता है। कभी **'तुम पै कौन दुहावै गैया'** और **'करिल्यो न्यारी हरि अपनी गैया'** में। यहाँ पर राधा भोरी, ग्रामीण, अजान और निश्छल है ही किन्तु चपल और वाक् कुशल व्यवहारिक छोरी भी है।राधा बड़ी स्पष्ट है। वादिता से लेकर व्यवहार कुशल हाजिर जवाबी तक न जाने कितने सुलभ गुण भरे पड़े हैं। माता यशोदा से ''मैं कहा करौ सुतहि नहिं बरजति, घर तें मोहि बुलावै'' तथ्य स्वयम् अपनी माता को सन्तुष्ट करने वाली ''सूरदास अति चतुर राधिका, यह कहि समझाई महतारी'' तक उसका यही रूप दिखलाई पड़ता है। यह सत्य है कि 'सूरसागर' में राधा–कृष्ण के रंग–रहस्य के इतने प्रकार के चित्र सामने आते हैं कि सूर का हृदय–प्रेम की नाना उमंगों का अक्षय भण्डार प्रतीत होता है।'' राधा का असाधारण चित्रण हुआ है जब बछड़े के सींग निकल आते हैं तो समझा जाता है कि वह जवान हो चला है। इसमें लक्ष्य करके आचार्य विश्व नाथ ने कहा था कि काम देव के उद्‌भेद (अंकुरित होने) को श्रृंग कहते हैं।'' वस्तुतः किशोरावस्था तक आते–आते राधा की स्थिति भी यही बछड़े वाली हो जाती है और फलतः यहीं से उनका (कृष्ण) प्रेम भाव रुप प्रदर्शित होने लगता है जिसमें असाधारण स्वास्थ्य झलकता है।

कृष्ण का बल्लभ रूप मुखरित होने लगता है। वह लोक–लाज को तृणवत् तोड़ना चाहती है। यहाँ से राधा का आदर्श प्रेमिका–रूप–प्रस्फुटित होने लगता है। सूर के कृष्ण **''लोक–लाज कुल कानि मानियै डरिये बन्धु, पिता, महतारी''** की सलाह देकर राधा–प्रेम–उन्मुक्ता राधा–को रोकते हैं। समाज में राधा–कृष्ण विवाह से राधा पूर्णतया स्वकीया–बल्लभा हो जाती है। यहाँ पर लेश मात्र भी अनैतिकता नहीं झलकती है।

राधा कृष्ण के साथ अनेक तरह की संयोग–क्रीड़ाओं में मग्न रहती है। यहाँ तक की कृष्ण को पूर्णतया अपने वश में कर लेती है–''स्याम भए राधा बस ऐसै।'' रास लीला, मान लीला, खण्डिता, मध्यम–बड़ी मान लीला, बसन्तोत्सव आदि में राधा का संयोगकालीन स्वकीया रुप अबाध गति से प्रवाहित होता है। ''इस प्रकार का अपने आप में भरपूर प्रेम सूर दास की ही लेखनी की करामात है। प्रेम के सवा लाख गानों का समुद्र ..... कहीं निर्मर्यादित नहीं हुआ।'' यहाँ राहत का स्वाभाविक स्वाकार्य ही है।

राधा के प्रेमिका–बल्लभा रुप की महानता सर्वाधिक सशक्त रूप में अभिव्यक्त होती है। विरुद्ध में। कृष्ण के मथुरा–प्रवास से लेकर द्वारिका में हुए राधा–कृष्ण–पुनर्मिलन तक का एक–एक दिन, एक–एक क्षण राधा के इसी करुण पक्ष का उदाहरित रहता है। इसमें भी, **'सूर दास की राधा का हृदय–सौन्दर्य देखना हो तो उद्धव का (भ्रमर गीत) प्रसंग देखिये। गोपियों ने क्या–क्या नहीं कहा कृष्ण को भी कहा, उद्धव को भी कहा। बेचारे भौंरे की तो**

दुर्गति ही कर डाली। पर हाय, राधिका ने क्या कहा ? उस बरसाने की चोरटी ने कुछ भी नहीं कहा–कुछ भी नहीं।'' इनका उदाहरण देखिए ''सखि री! हरिहिं दोष जनि देहु।''

यद्यपि विरहग्रस्तता राधा की स्थिति है। स्वयं सूरदास कहते हैं कि–

''अति मलित वृषभानु कुमारी । .....
छूटै ब्रिकुर बदन कुम्हलाने ज्यौं नलिनी हिम कर की मारी।
'हरि सन्देस सुनि सहज मृतक भई, इक बिरहिन दूजे अलि जारी।।'

सत्य माना जाए तो सम्पूर्ण सूरसागर में सोलह हजार गोपियों की पीड़ा का नाम ही राधा है जिसे निम्नलिखित पद में देखा जा सकता है। यथा :–

सोरह सहस पीर तन एकै राधा कहिये सोय।'

यहाँ पर राधा नायिका है। वह ऐसी नायिका जिसमें स्वकीया–परकीया के कई रुप देखने को मिलते हैं। प्रमाणतः निम्नलिखित काव्यांशों को देखिये –

प्रोषित पतिका –

''बिछुरे री मेरे बाल संघाती'
निकसि न जात प्रान ये पापी फाटति नाहिन छाती।।''

खण्डिता –

''प्यारी चितै रही मुख पिय को।
अन्जन अधर कपोलनि चन्दन लाग्यो काहू त्रिय को।.....
तुरत उठि दरपन करत लीन्हे देखैउ बदन सुधारो।।''

सवकीया रुप का चित्रण

''राधा रचि–रचि सेज संवारति।
तापर सुमन सुगन्ध बिछावति बारम्बार निहारित।।''

सवकीया रुप का चित्रण

''राधा चकृत भई मन माहीं।
अबहीं स्याम द्वार है झांके ह्याँ आये क्यों नाहीं।।''

का सच

''बोलत नहिं मान करि हरि सों, हरि अन्तर रहे आइ।.....
प्रिया मान करि बैठि रही है, रिस करि क्रोध तुम्हारै।''
सूरसागर

इसी आदर्श पेमिका रूप राधा का स्वाभिमान चरम सीमा पर पहुँचा जाता है क्योंकि द्वारिका में 'राधा–कृष्ण–पुनर्मिलन' का स्वरूप देखने को मिलता है। अपने प्रिय कृष्ण को राज रानी रुक्मणि आदि के साथ घिरा देख कर भी, दीर्घ काल से विरहग्रस्तता राधा का मन सौतिया डाह से उद्विग्न नहीं होता है और ना स्वकीया वाला स्वाभिमान उनको अधीर नहीं होने देता है। द्वारिकाधीश कृष्ण द्वारा भेंट कराये जाने पर वह सपत्नी रुक्मणि से ऐसे मिलती है, ''जैसे बहुत दिनों के पश्चात् की बिछुरी एक बाप की बेटी'' मिलती है।

''राधा माधव भेंट भई।
राधा माधव–माधव राध कीट भृंग गति है जु गई।
माधव राधा के रंग राचे राधा माधव रंग रई।।''

यहाँ कवि सूरदास घोषित करता है –

''राधा हरि आधा–आधा तनु एकै है ब्रज में अवतरि।''

इसलिए में 'राधा–माधव–पुनर्मिलन' में दोनों में पुनः एक हो जाना भी इसी का संकेत है और अपने इस विराट रुप में राधा का स्वरूप प्रकट किया है :–

''रुप रासि, सुख रासि राधिके, सील महा गुन रासी।
कृष्ण चरन ते पावहिं स्यामा, जे तुम चरन उपासी।।
जग नायक जगदीस पियारी, जगत जननि जग रानी।
अगतिनि की गति भक्तिनि की पति राधा मंगल दानी।
असरन–सनी, भव–भय–हरनी, वेद पुरान बखानी।।''

राधा तत्कालीन साधारण भारतीय नारी का कहीं ना कहीं प्रतिनिधित्व भी करती है। राधा का स्वकीया होकर भी दीर्घ काल तक विरहग्रस्तता रहना, पति (कृष्ण)–मिलन हेतु नाना देवताओं की उपासना करना, नार्योचित सौतिया डाह और तानें, संयोगकालीन मान, विवश–निरुपाय और अबला रुप आदि से ''कवि ने नारी को इसी काल की मौन वेदना को स्वर प्रदान किया है।'' इतना ही नहीं बल्कि ''सूर की राधा लौकिकता तथा अलौकिकता की, प्रेम तथा सन्यास की स्नेह के वैमल्य की तथा प्रीति के उच्छ्वास की एक निर्मल लीला स्थली है, इसमें सन्देह का लेश भी नहीं है।''[7] वस्तुतः देखा जाए तो ''सूर की राधा तीन लोक से अलग सृष्टि है–अपूर्व, अद्भुत, विचित्र इसलिए विश्व–साहित्य में ऐसी प्रेमिका नहीं है, नहीं है।''

समकालीन कवियों ने भी राधा सम्बन्धी अनेक रचनायें की हैं किन्तु यद्यपि सूर जैसा व्यापक, सरस, स्वाभाविक और प्रभावेत्पादक रुप कोई भी प्रस्तुत नहीं कर पाया है। रीतिकालीन काव्य में राधा साधारण नायिका मात्र बन कर रह गयी है जबकि आधुनिक काल में राधा 'सूर द्वारा स्थापित परम्परा का अवशेष' मात्र है। एकदम आधुनिक कालीन देश भक्ता और समाज–सुधारिका अथवा एकदम अत्यन्त दर्द भरी स्त्री जो आधुनिक स्त्री की भाँति अपने प्रिय कृष्ण की आलोचना तक करती है जबकि ''सूर की राधा में श्रीमद् भागवत की गोपियों तथा ब्रह्मर्ववर्त पुराण, पद्म पुराण, जय देव, चण्डी दास, विद्यापति की राधा की विशेषतायें लिए हुए हैं। मनोवैज्ञानिकता, स्वाभाविकता एवं रसपेशलता के हेम आवरण में सूर ने अपनी राधा का एक सा रूप दिया कि उनके पूर्ववर्ती कवियों द्वारा अंकित राधा के सभी चित्र निष्प्रभ हो गये। यह भक्त कवि सूर के अलौकिक व्यक्तित्व को हिन्दी साहित्य को अप्रतिम देन है।''[8] यह सत्य है कि राधा का अनुपम एवं अलौकिक सवरुप सूर काव्य में मुखरित हुआ है जिसके परिणामस्वरूप वह सभी की पूजनीय बन गई।

सन्दर्भ सूची :

1. रामचन्द्रशुक्ल – भ्रमरगीत सागर – पृष्ठ – 16
2. कृष्ण शर्मा – विद्यापति और सूरकाव्य में राधा – पृष्ठ – 90
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी – सूर साहित्य – पृष्ठ – 111
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी – सूर साहित्य – पृष्ठ – 113
5. सूरदास – सूरसागर।
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी – सूर साहित्य – पृष्ठ – 111
7. डॉ. बलदेव उपाध्याय – भारतीय वांग्मय में श्री राधा–पृष्ठ–103
8. कृष्ण शर्मा – विद्यापति और सूर काव्य में श्री राधा – पृष्ठ – 112